ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-1* Issue-6* July- 2016
Innovation The Research Concept

हिंदी भाषा और गद्य में मुहावरे और लोकोक्ति

सुमन वर्मा
व्याख्याता,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर
राजस्थान, भारत

Abstract

हिंदी गद्य में मुहावरे और लोकोक्तियों का हमेशा से प्रचलन रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से इनके सृजन के बारे में कोई प्रमाण नहीं है। इतना अवश्य है कि हिंदी लोकोक्तियों और मुहावरों के मूल में लोगों के लंबे अनुभव निहित हैं| इनका इतिहास लगभग उतना ही पुराना है जितना पुराना मानव-बोध और मानव का ज्ञान है। अनेकों शताब्दियों से प्रचलन में चले आ रहे मुहावरे और लोकोक्तियाँ आज भी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हैं| लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रमुख अंतर यह है कि लोकोक्तियाँ अपेक्षाकृत थोड़ी बड़ी होती हैं, जबकि मुहावरे छोटे होते हैं। कहावत लोकोक्ति का पर्याय है।

लोकोक्तियों के अनेकों उदाहरण मिलते हैं जिनमें से कुछ प्रचलित उदाहरण हैं- भैंस के आगे बीन बजाये, भैंस खड़ी पगुराय, न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी, गरीब की लुगाई मौहल्ले भर की भौजाई, जाके पैर न फटे बिवाई वो का जाने पीर पराई इत्यादि। मुहावरे छोटे होते हैं जैसे- टेढ़ी खीर, मुँह फुलाना, गाल बजाना, साँस फूलना, आँख की किरकिरी, पाँव भारी होना इत्यादि।

मुहावरे किसी वाक्य में क्रिया की तरह कार्य करते हैं जैसे एक मुहावरा है 'अंधे की लकड़ी'। इसको वाक्य में प्रयोग करते हैं- 'वह अंधे की लकड़ी है', 'वह अंधे की लकड़ी था', 'वह अंधे की लकड़ी बनेगा' तो मुहावरा किसी भी वाक्य में क्रिया की तरह कार्य करता है। कहावत पर काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। 'नाच ना जाने आंगन टेढ़ा' कहावत वाक्य पूरा होने के बाद कही जाती है। उदाहरण- रामू से कोई कार्य करने के लिए कहा जाता है तो वह करता नहीं है बल्कि बहाने मारता है.... इसे ही कहते हैं 'नाच ना जाने आंगन टेढ़ा'।

प्रस्तुत शोधपत्र जो गुणात्मक शोध की श्रेणी के अंतर्गत आता है, हिंदी भाषा और हिंदी गद्य में लम्बे समय से हो रहे मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग को उदाहरण सहित प्रस्तुत करता है। शोधपत्र निष्कर्ष यह है कि वर्तमान में भी हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा में मुहावरे और लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं और भविष्य में भी इनको आम बोल-चाल की भाषा और हिंदी साहित्यिक लेखन में प्रयोग किया जाता रहेगा।

मुख्य शब्द: हिंदी, भाषा, गद्य, मुहावरे, लोकोक्ति, बोल-चाल, वाक्यांश, शब्द-समूह, पद।

प्रस्तावना

हिंदी भाषा और साहित्य बहुत रोचक और लोकप्रिय हैं जिनको अनेकों तत्व और अवयव मिलकर रोचक बनाते हैं। मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी ऐसे ही तत्व हैं जिनका हिंदी भाषा और साहित्य को रोचक बनाने में विशेष योगदान रहा है। हिंदी साहित्यकारों जिनमें निबंधकार, कथाकार, नाटककार, उपन्यासकार आदि सम्मिलित हैं, के लिए मुहावरे और लोकोक्तियाँ सदैव प्रिय रहे हैं। शायद ही कोई ऐसा निबंध, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि होगा जिसमें मुहावरों और लोकोक्तियों का न हुआ हो।

मुहावरे की परिभाषा

जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है अथवा जब कोई शब्द समूह या पद या वाक्यांश निरंतर अभ्यास के कारण सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ व्यक्त करने लगे तो उसे मुहावरा कहते हैं।

हिंदी मुहावरे के प्रसिद्द उदाहरण

1. नौ दो ग्यारह होना
2. आस्तीन का सांप होना
3. बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद
4. नाच न आवे आँगन टेढ़ा
5. नदी नाव संयोग
6. ऊँची दूकान फीका पकवान
7. ऊँट के मुँह में जीरा
8. घी के दिये जलाना
9. आंख का तारा
10. राह का काँटा
11. तिल का ताड़ बनाना
12. सूरज को दिया दिखाना
13. लकीर का फकीर
14. कौड़ियों के मोल
15. भेड़ की खाल में भेड़िया
16. कलेजा मुँह को आना
17. कलेजा ठंडा होना
18. चोर चोर मौसेरे भाई
19. घड़ियाली आँसू बहाना
20. डूबते को तिनके का सहारा
21. चिराग तले अँधेरा
22. अन्धे की लाठी
23. आँख दिखाना
24. अक्ल का अंधा
25. चैन की बंशी बजाना
26. चार दिन की चाँदनी
27. कलेजा मुँह को आना
28. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू
29. ईद का चाँद होना
30. दिन में तारे नजर आना
31. आम के आम गुठलियों के दाम

लोकोक्ति की परिभाषा

लोकोक्ति का अर्थ है लोक में प्रचलित वह कथन अथवा उक्ति जो व्यापक लोक-अनुभव पर आधारित हो। लोकोक्ति में लौकिक-सामाजिक जीवन का अंश सत्य विद्यमान रहता है। लोकोक्ति में गागर में सागर जैसा भाव रहता है। लोकोक्ति कहने के लिए उचित प्रसंग की पहचान आवश्यक है।

हिंदी लोकोक्ति के प्रसिद्द उदाहरण

1. आम के आम गुठलियों के दाम
2. उल्टा चोर कोतवाल को डांटे
3. अंधेरे नगरी चौपट राजा
4. अनदेखा चोर शाह बराबर
5. अपनी नाक कटे सो कटे; दूसरे का सगुन तो बिगड़े
6. अपना रख,पराया चख
7. आगे जाए घुटने टूटे,पीछे देखे आँख फूटे
8. आगे नाथ न पीछे पगहा
9. आठ कन्नौजिया नौ चूल्हे
10. कभी धन धना, कभी पाव भर चना
11. छछूंदर के सर पे ना भाए चमेली
12. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद
13. अधजल गगरी छलकत जाए भरी गगरिया चुप्पे जाए
14. न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी, सूत न कपास जुलाहों में लट्ठम लट्ठा
15. पांचो उंगलियां बराबर नहीं होती
16. गाड़ी देख लाड़ी के पांव ठिठके
17. सौ सुनार की एक लोहार की
18. थोथा चना बाजे घना।

मुहावरे और लोकोक्ति में समानता

1. दोनों ही गम्भीर और व्यापक अनुभव की उपज हैं।
2. दोनो का अभिधात्मक या साधारण अर्थ महत्व नहीं रखता, दोनों ही विलक्षण अर्थ को प्रकट करते हैं।
3. दोनों ही भाषा-शैली को सरस और प्रभावशील बनाते हैं।
4. दोनों में प्रयुक्त शब्दों के स्थान पर पर्यायवाची या समानार्थी शब्दों का प्रयोग नहीं किया जा सकता।
5. दोनों का प्रयोग किसी अन्य और भिन्न अर्थ में नहीं किया जा सकता।
6. दोनों की सार्थकता प्रयोग के पश्चात् ही सिद्ध किया जा सकता है।

मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर

1. लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है, जबकि मुहावरा वाक्य का अंश होता हैं।
2. लोकोक्ति लोक में प्रचलित उक्ति होती है जो भूतकाल का लोक अनुभव होती है जबकि मुहावरा अपने रूढ़ अर्थ के लिए प्रसिद्ध होता हैं।
3. पूर्ण इकाई होने के कारण लोकोक्ति में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है, जबकि मुहावरों में वाक्य अनुसार परिवर्तन होता हैं।
4. पूर्ण वाक्य होने के कारण लोकोक्ति का प्रयोग स्वतंत्र और अपने आप में पूर्ण इकाई के रूप में होता है, जबकि मुहावरा किसी वाक्य का अंश बनकर आता हैं।

5. लोकोक्ति तथा मुहावरे में उपयोगिता की दृष्टि से भी पर्याप्त अंतर है। लोकोक्ति किसी बात का समर्थन, विरोध अथवा खंडन करने के लिए प्रयोग में ली जाती हैं।
6. मुहावरा पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं होता है इसका अर्थ निकालना पड़ता है जबकि कहावत का अर्थ पूर्ण रूप से स्पष्ट होता है।
7. मुहावरा चमत्कार कर भाषा सौंदर्य का मंडन करता है जबकि कहावत कथन के खंडन, मंडन अथवा विरोध को रेखांकित करता है।

उद्देश्य

1. हिंदी भाषा के विभिन्न रोचक तत्वों को ज्ञात करना।
2. हिंदी भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों के महत्व को ज्ञात करना।
3. मुहावरों और लोकोक्तियों की समानता को ज्ञात करना
4. मुहावरों और लोकोक्तियों के अंतर को ज्ञात कर स्पष्ट करना
5. वर्तमान में हिंदी मुहावरों और लोकोक्तियों के महत्व और प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

प्राक्कल्पना

1. हिंदी भाषा को अनेकों तत्व रोचकता प्रदान करते हैं।
2. मुहावरे और लोकोक्तियाँ अर्थात कहावतें हिंदी भाषा को रोचक बनाती हैं।
3. मुहावरों और लोकोक्तियों में अनेकों समानताऐं हैं।
4. मुहावरों और लोकोक्तियों में अनेकों अंतर हैं।
5. मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रचलन अनादिकाल से चल रहा है।
6. हिंदी मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रचलन आज भी लोग बोलने और लेखन में करते हैं।

साहित्य पुनरावलोकन

1. 'मुहावरों के बिना न बोलने की भाषा में जान पड़ती है, न लिखने की। मुहावरे भाषा को गतिशील और रोचक बनाते हैं। मुहावरों के अभाव में भाषा निस्तेज, नीरस और निष्प्राण होती है। मुहावरों का प्रयोग केवल साहित्यकारों और भाषा वैज्ञानिकों तक सीमित नहीं है, अपितु इनका प्रयोग कर सामान्यजन भी दैनिक जीवन में बोली जाने वाली अपनी भाषा और बोली को चित्रमय और प्रभावी बना सकते हैं'।[1]
2. 'अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यासों में कथानक को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने हेतु, पात्र-संरचना और पात्र चित्रण और साथ ही कथानक की भाषा को गतिशील और रोचक बनाने हेतु समय-समय पर अनेकों ऐसे मुहावरों और लोकोक्तियों और कहावतों का प्रयोग किया है जो लम्बे समय से हिंदी-भाषी क्षेत्रों में बोली जाती हैं। उनके द्वारा किया गया मुहावरों और कहावतों का प्रयोग पाठकों पर गहरा प्रभाव छोड़ती हैं और उनके द्वारा व्यक्त वाक्यों को समझने में मददगार होती हैं'।[2]
3. 'मार्कण्डेय की कहानियां बाल मनोविज्ञान से सम्बंधित हैं। उन्होंने बाल मनोदशाओं का सरल वर्णन अपनी कहानियों में इस प्रकार प्रभावी तरीके से किया है कि उनको आसानी से समझा जा सकता है। अपनी कहानियों को रोचकता प्रदान करने हेतु उन्होंने अनेकों साधन अपनाए हैं जिनमें से एक साधन कहावतों और मुहावरों का प्रयोग भी है। उनके द्वारा प्रयुक्त मुहावरे और कहावतें क्लिष्ट न होकर सरल और सहज हैं जिनको आसानी से समझा जा सकता है और दिए गए सन्दर्भ में उनका अर्थ भी निकाला जा सकता है'।[3]
4. 'गद्य और पद्य साहित्य के दो रूप माने गए हैं। 'गद्य' शब्द का अर्थ है-कही जाने वाली बात। मनुष्य ने जब से बोलना सीखा, गद्य तभी से अस्तित्त्व में आ गया था। लेकिन प्राचीन उपलब्ध साहित्य में पद्य पहले मिलता है जबकि गद्य के उदाहरण विरल हैं। गद्य की प्रचुरता आधुनिक हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। कदाचित इसीलिए हिंदी का आधुनिक काल गद्य युग कहलाया। आधुनिक युग में जिस गति से गद्य साहित्य की रचना हुई उतनी पद्य की नहीं। हिंदी कथा साहित्य का आरम्भ 1800 के लगभग होता है। उस समय तक कहानी और उपन्यास का अंतर स्पष्ट नहीं हो पाया था। उस समय की कहानी को उपन्यास के अंतर्गत ही समाहित माना जाता था। भारतेन्दु से पूर्व का कथा (उपन्यास एवं कहानी) साहित्य पौराणिक आख्यानों पर आधारित है तथा लेखक रागात्मक कल्पनाओं से प्रेरित हैं। भारतेन्दु से पूर्व (1800 से 1858) हिन्दी गद्य साहित्य में हमें तीन महत्त्वपूर्ण ग्रंथ उपलब्ध होते हैं। पहला लल्लूलाल का 'प्रेमसागर' (1803) दूसरा सदल मिश्र का 'नासिकेतोपाख्यान'(1803) और तीसरा सैयद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' (1800 से 1810 के बीच)। 'नासिकेतोपाख्यान' तथा 'प्रेमसागर' पौराणिक आधार पर लिखे ग्रन्थ हैं। इसलिए सभी पात्र परम्परागत संस्कृत पुराणों के अनुरूप हैं। 'रानी केतकी की कहानी' को एक मौलिक रचना माना जाता है। इसके प्रायः सभी पात्र उच्च मध्यवर्गीय हैं। प्रत्येक ग्रन्थ कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से ओतप्रोत है जिनका प्रयोग विभिन्न सन्दर्भों को प्रस्तुत करने हेतु किया गया'।[4]
5. 'संकट के मुहावरे साझा नृवंशविज्ञान के संदर्भ के माध्यम से पीड़ा का संचार करते हैं, और संकट के मुहावरों की बेहतर समझ प्रभावी नैदानिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य संचार में योगदान कर सकती है। यह व्यवस्थित समीक्षा विश्व स्तर पर "बहुत अधिक सोचने" मुहावरों का गुणात्मक संश्लेषण है, ताकि संस्कृतियों में उनकी प्रयोज्यता और परिवर्तनशीलता निर्धारित की जा सके।"बहुत अधिक सोचना" मुहावरे आम तौर पर चिंतनशील, दखल देने वाले और चिंतित विचारों को संदर्भित करते हैं और इसके परिणामस्वरूप कई प्रकार की

जटिलताएं, शारीरिक और मानसिक बीमारियाँ या यहाँ तक कि मृत्यु भी होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये मुहावरे अवसाद, चिंता और पीटीएसडी सहित सामान्य मनोरोग संबंधी संरचनाओं के साथ परिवर्तनशील ओवरलैप करते हैं। हालाँकि, "बहुत अधिक सोचना" मुहावरे अनुभव, संकट और सामाजिक स्थिति के उन पहलुओं को दर्शाते हैं जो मनोरोग निदान द्वारा पकड़ में नहीं आते हैं और अक्सर सांस्कृतिक मतभेदों के अलावा, सांस्कृतिक अंतर के बीच व्यापक भिन्नता दिखाते हैं'।[5]

6. 'ग्रांट और बाउर (2004) के अनुसार, मुहावरे शब्द का उपयोग विभिन्न प्रकार की बहु-शब्द इकाइयों (एमडब्ल्यूयू) को शामिल करने के लिए किया गया है। ग्रांट और बाउर (2004) ने MWU को "उपयोग द्वारा स्वीकृत शाब्दिक सामग्री के निश्चित और आवर्ती पैटर्न" के रूप में वर्णित किया है (पृष्ठ 38)। मून (1998) बताते हैं कि "मुहावरा एक अस्पष्ट शब्द है, जिसका उपयोग परस्पर विरोधी तरीकों से किया जाता है" (पृष्ठ 3). जैसा कि कूपर (1998) बताते हैं, समझने के साथ-साथ मुहावरों का निर्माण करना भाषा सीखने वालों को विशेष शब्दावली सीखने की समस्याओं के साथ प्रस्तुत करता है क्योंकि वे आलंकारिक अभिव्यक्तियाँ हैं जिनका मतलब यह नहीं है कि व्यक्तिगत शब्द शाब्दिक रूप से क्या कहते हैं और वे बोलने और लिखने दोनों में अक्सर सामने आते हैं। प्रवचन. सिम्पसन और मेंडिस (2003) एक मुहावरे को "शब्दों का एक समूह जो कम या ज्यादा निश्चित वाक्यांश में होता है, जिसके समग्र अर्थ की भविष्यवाणी उसके घटक भागों के अर्थ का विश्लेषण करके नहीं की जा सकती है" के रूप में परिभाषित करते हैं (पृष्ठ 423)'।[6]

शोधपद्धति

प्रस्तुत शोधपत्र लेखन हेतु जिस शोध पद्धति और शोध प्ररचना को अपनाया गया है, उसमें प्रमुख रूप से निम्नलिखित सम्मिलित हैं-

1. विषय का चुनाव
2. अध्ययन के उद्देश्यों का निर्धारण
3. प्राक्कल्पना का निर्माण
4. विषय की गहराई में जाने हेतु और विस्तृत ज्ञान अर्जन हेतु सम्बंधित साहित्य का अध्ययन
5. विशिष्ट रूप से प्रासंगिक और महत्वपूर्ण अध्ययनों का चयन
6. अंतर्वस्तु विश्लेषण
7. निष्कर्ष।

लेखिका द्वारा सर्वप्रथम स्वरुचि अनुसार विषय का चुनाव किया। विषय चयनोपरांत विभिन्न परंपरागत और आधुनिक स्रोतों से सम्बंधित साहित्य का सामान्य अध्ययन किया। तदोपरांत, उसने विशेष रूप से सहायक सिद्ध होने वाले शोध-ग्रंथों, पुस्तकों और शोधपत्रों का चयन कर उनका गहन अध्ययन किया। अपने विद्यार्थी जीवन, व्यावहारिक जीवन और शैक्षणिक जीवन के अनुभवों और ज्ञान के आधार पर उसके द्वारा अंत में निष्कर्ष निकाला गया।

निष्कर्ष

हिंदी गद्य में वाक्य को प्रभावशाली बनाने हेतु अनेकों तरीके अपनाये जाते हैं जिनमें से मुहावरे और लोकोक्ति अथवा कहावतों का प्रयोग भी है जिनका प्रयोग निबंध लेखकों, नाटककारों, उपन्यासकारों एवं अन्य साहित्यकारों द्वारा लंबे समय से किया जाता रहा है और जिनके प्रयोग का चलन आज भी है। प्रायः पाठकों के लिए मुहावरों और लोकोक्तियों के अर्थ और अंतर को जानना कठिन होता है और अज्ञानतावश कुछ पाठक दोनों को एक दूसरे को एक ही मानकर उनके लिए या तो मुहावरा अथवा लोकोक्ति शब्द का प्रयोग कर लेते हैं, जबकि मुहावरे और लोकोक्तियों में अंतर होता है जिसको जाना नितांत आवश्यक है।

जब कोई छोटा शब्द-समूह जिसमें प्रायः दो अथवा तीन शब्द होते हैं, साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे, उसे मुहावरा कहते हैं। आँख दिखाना (गुस्से से देखना), हाथ तंग होना (पैसे की कमी होना) आदि मुहावरों के कुछ लोकप्रिय उदाहरण हैं। हिंदी में हजारों मुहावरे हैं जो वाक्यों का विशेष अर्थ बताने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं।

लोकोक्तियाँ अथवा कहावतें मुहावरों से भिन्न होती हैं लोकोक्ति समाज में कही जाने वाली तथा अनुभव की गयी बोली से बनती है। अन्य शब्दों में, लंबे अनुभव से समाज द्वारा प्राप्त सीख जो वाक्य अथवा वाक्य के बड़े अंश के रूप में होती है, लोकोक्ति अथवा कहावत कहलाती है। 'लोकोक्ति' शब्द दो शब्दों लोक + उक्ति के योग से बना है। लोक का मतलब है संसार के लोग और उक्ति का मतलब है कथन। लोकोक्ति, कहावत एवं जनश्रुति एक दूसरे के पर्याय हैं। अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग (जहाँ सब लोग अलग व्यवहार करें), हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और (कहना कुछ और करना कुछ और) आदि लोकोक्तियों के उदाहरण हैं।

मुहावरा वाक्यांश मतलब 'किसी पूरे वाक्य का कुछ अंश' होता है जबकि 'कहावत पूरा वाक्य' होता है। मुहावरा स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं हो सकता जबकि कहावत का प्रयोग स्वतंत्र रूप से होता है। मुहावरे का संबंध फल के लिए नहीं होता है जबकि कहावत का संबंध फल के लिए होता है। मुहावरा पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं होता है। इसका एक विशेष अर्थ होता है जबकि कहावत का अर्थ पूर्ण रूप से स्पष्ट होता है। मुहावरा भाषा को अलंकृत करके भाषा के सौंदर्य को बढ़ाता है जबकि कहावत कथन के खंडन और विरोध को रेखांकित करता है।

मुहावरा किसी बात को अलग प्रकार से कहने का तरीका है जबकि कहावत विचारों का निचोड़ और अनुभव का मूल है। मुहावरों में शब्द काल, वचन पुरुष के

अनुसार बदल जाते हैं लेकिन कहावत में परिवर्तन नहीं होता है। वो अपने यथावत रूप में हमेशा रहता है। मुहावरे का अंत अधिकांश ना पर होता है जैसे- काम बंद करना, आँख का तारा होना, दिन में तारे दिखाई देना, भैंस के आगे बीन बजाना, आँखें चार होना इत्यादि। कहावतों के अर्थ स्पष्ट होते हैं और अपने आप में पूर्ण वाक्य होते हैं जैसे- दूध का जला छाछ भी फूंककर पीता है, जैसी करनी वैसी भरनी, नाच ना जाने आँगन टेढ़ा, धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का, अधजल गगरी छलकत जाए, अंधो में काना राजा इत्यादि।

निष्कर्षतः लोकोक्तियों अर्थात कहावतों और मुहावरों के बारे में कहा जा सकता है कि कहावतें मुख्य रूप से सामान्य अर्थ या साहित्यिक अर्थ को व्यक्त करती हैं। इनमें सामान्य ज्ञान, अनुभव, और जीवन के तत्वों का संक्षिप्त विवरण होता है। उनका उद्घाटन, व्याख्यान या वर्णन बहुत सीमित होता है। कहावतों के अर्थ को निर्धारित करने के लिए बहुत सारी संदर्भ जानकारी की आवश्यकता नहीं होती है। यहां कुछ उदाहरण हैं:"अंधों में काना राजा" - यह कहावत उस व्यक्ति को संदर्भित करती है जिसकी दृष्टि अत्यधिक कमजोर होती है, लेकिन वह अपनी विवेकशीलता से आदर्शों को प्रदर्शित करता है।

इसके विपरीत, मुहावरे एक वाक्यांश होते हैं जिनमें विशेष अर्थ प्रकट होता है और जिन्हें आम भाषा में नहीं समझा जा सकता है। इन्हें समझने के लिए विशेष संदर्भ और ज्ञान की आवश्यकता होती है। मुहावरों के भाषिक अर्थ को अक्सर वाक्यांश के अलावा पूरे वाक्य के साथ मिलाकर समझाया जाता है। यहां कुछ उदाहरण हैं:"आपकी जुबान पीछे रखो" - इस मुहावरे का शाब्दिक अर्थ होता है कि आपको चुप रहना चाहिए। यह इस्तेमाल होता है जब किसी व्यक्ति को उचित नहीं माना जाता है और उसे कहा जाता है कि वह अपनी बातें रखें।"अपने मुंह मियां मिट्ठू बनाना"- इस मुहावरे का शाब्दिक अर्थ होता है कि आपको खुद की प्रशंसा करनी चाहिए। इसे उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है जब किसी व्यक्ति को अपने किए गए कार्यों पर गर्व होता है और वह उन्हें खुद ही प्रशंसा करता है। संक्षेप, कहावतें मुख्य रूप से सामान्य अर्थ को व्यक्त करती हैं, जबकि मुहावरे विशेष अर्थ प्रकट करते हैं जो आम भाषा में समझा नहीं जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. हरिवंशराय शर्मा, 'मुहावरा कोष', प्रकाशक: राजपाल एंड सन्स, 2015
2. बी. जे. पटेल, 'अमृतलाल नागर के उपन्यास: एक समीक्षात्मक अध्ययन', पीएच. डी. शोध प्रबंध, हिंदी विभाग, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, 2008
3. निवेदिता सिंह, 'मार्कण्डेय की कहानियों में बाल मनोविज्ञान', शब्द ब्रह्म: भारतीय भाषाओँ की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, 17 अप्रैल, 2015
4. राजेश कुमारी कौशिक, 'प्रेमचंद-पूर्व हिंदी कथा साहित्य में उभरता समाज और शैल्पिक प्रविधियां', अपनी माटी: साहित्य और समाज का दस्तावेजीकरण, वर्ष 2, अंक 15, जुलाई-सितम्बर 2014
5. बोनी एन. कैसर एवं अन्य, '"बहुत ज्यादा सोचना": संकट के एक सामान्य मुहावरे की एक व्यवस्थित समीक्षा', सामाजिक विज्ञान मेड. 2015 दिसंबर; 147: 170-183
6. फतेमे मोहम्मदी अस्ल, 'ईएफएल कक्षाओं में मुहावरे सीखने पर संदर्भ का प्रभाव', MEXTESOL Journal, वॉल्यूम 37, नंबर 1, 2013